हिंदी पत्रकारिता के गौरवमयी 200 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

द्वारा

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

"उदंत मार्तंड से ए.आई. युग तक : दो शताब्दियों का महासंवाद"

11-12 अप्रैल, 2026

(ऑफलाइन एवं ऑनलाइन)

आयोजन स्थल- पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश

प्रायोजक- भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

परिचय

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर तथा पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर उत्तर प्रदेश का एक प्रमुख सार्वजनिक विश्वविद्यालय है, जो उच्च शिक्षा, शोध और अकादमिक नेतृत्व के लिए जाना जाता है। विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 1966 में (तत्कालीन कानपुर विश्वविद्यालय के रूप में) की गई थी।विश्वविद्यालय अपने विविध शैक्षणिक कार्यक्रमों, बहुविषयक अध्ययन-परंपरा और क्षेत्रीय समाज से गहरे जुड़ाव के लिए जाना जाता है। सी.एस.जे.एम. का उद्देश्य केवल डिग्री प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में बौद्धिक क्षमता, नैतिक दृष्टि, सामाजिक संवेदनशीलता और व्यावहारिक कौशल का विकास करना है।

विश्वविद्यालय मानविकी, समाज विज्ञान, विज्ञान, वाणिज्य, प्रबंधन, विधि, शिक्षा, कला, तकनीकी तथा अनुप्रयुक्त क्षेत्रों में अध्ययन और शोध के व्यापक अवसर उपलब्ध कराता है। इसके साथ ही विश्वविद्यालय अपने संबद्ध महाविद्यालयों और अकादमिक नेटवर्क के माध्यम से प्रदेश के बड़े हिस्से में उच्च शिक्षा की पहुँच बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सी.एस.जे.एम. का पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग (Department of Journalism & Mass Communication) मीडिया शिक्षा और संचार-अध्ययन के क्षेत्र में एक सक्रिय अकादमिक इकाई है। विभाग का लक्ष्य ऐसे मीडिया पेशेवर और शोधार्थी तैयार करना है जो समाचार एवं जनसंचार की बुनियादी समझ के साथ-साथ डिजिटल युग की तकनीकी दक्षता, नैतिक दृष्टि और सामाजिक उत्तरदायित्व भी रखते हों।

विभाग में पत्रकारिता के सिद्धांत और व्यवहार दोनों पर समान रूप से जोर दिया जाता है। अध्ययन-अध्यापन में प्रिंट, रेडियो, टेलीविजन, डिजिटल पत्रकारिता, न्यू मीडिया, विज्ञापन, जनसंपर्क, कंटेंट राइटिंग, मीडिया रिसर्च, कम्युनिकेशन थ्योरी, मीडिया एथिक्स, और समकालीन मीडिया प्रवृत्तियों को समाहित किया जाता है। विभाग विद्यार्थियों को लेखन, रिपोर्टिंग, एंकरिंग, स्क्रिप्टिंग, इंटरव्यू, एडिटिंग, और डिजिटल कंटेंट प्रोडक्शन जैसे कौशलों में प्रशिक्षित करने का प्रयास करता है, ताकि वे उद्योग की वास्तविक अपेक्षाओं के अनुरूप सक्षम बन सकें।

विभाग की पहचान यह भी है कि यह अकादमिक गतिविधियों को समाज और उद्योग से जोड़कर देखने की कोशिश करता है। विभाग द्वारा समय-समय पर अतिथि व्याख्यान, मीडिया संवाद, कार्यशालाएँ, प्रशिक्षण कार्यक्रम और संगोष्ठियाँ आयोजित की जाती हैं, जिनमें शिक्षाविदों के साथ मीडिया उद्योग के अनुभवी विशेषज्ञों का सहभाग होता है। इससे विद्यार्थियों और शोधार्थियों को सिद्धांत के साथ-साथ व्यावहारिक समझ भी मिलती है।

इस प्रस्तावित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के संदर्भ में DJMC की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि हिंदी पत्रकारिता की 200 वर्ष की यात्रा को समझना केवल ऐतिहासिक अध्ययन नहीं, बल्कि आज के ए.आई. और डिजिटल वातावरण में पत्रकारिता के भविष्य को दिशा देने का प्रयास भी है। विभाग का उद्देश्य इसी व्यापक दृष्टि के साथ अकादमिक विमर्श, शोध और सामाजिक सरोकारों को एक मंच पर लाना है।

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद (ICHR) भारत सरकार की एक प्रमुख शैक्षिक एवं शोध-संस्था है, जिसकी स्थापना देश में इतिहास लेखन और ऐतिहासिक अनुसंधान को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से की गई थी। यह संस्था इतिहास के विविध आयामों—प्राचीन, मध्यकालीन, आधुनिक और समकालीन पर उच्चस्तरीय शोध को बढ़ावा देती है। ICHR की स्थापना वर्ष 1972 में शिक्षा मंत्रालय (अब शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) के अधीन एक स्वायत्त निकाय के रूप में हुई। इसके गठन का उद्देश्य भारतीय इतिहास के वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ और स्रोत-आधारित अध्ययन को संस्थागत समर्थन प्रदान करना था।

प्रस्तावना तथा उद्देश्य

हिंदी पत्रकारिता की गौरवशाली दो शताब्दियों की ऐतिहासिक यात्रा भारतीय समाज, संस्कृति, लोकतंत्र और जनचेतना के विकास की सशक्त गाथा है। वर्ष 1826 में 'उदंत मार्तंड' के प्रकाशन से आरंभ हुई यह धारा आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) आधारित डिजिटल युग तक पहुँच चुकी है। इन दो सौ वर्षों में हिंदी पत्रकारिता ने औपनिवेशिक दमन के विरुद्ध आवाज़ उठाने से लेकर स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक दिशा देने, लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने, सामाजिक सुधार आंदोलनों को गति प्रदान करने तथा जनसरोकारों को अभिव्यक्ति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मीडिया का स्वरूप तीव्र तकनीकी परिवर्तनों से गुजर रहा है। प्रिंट से इलेक्ट्रॉनिक, न्यू मीडिया से सोशल मीडिया और अब ए.आई. आधारित स्वचालित पत्रकारिता तक की यात्रा ने पत्रकारिता की कार्यप्रणाली, नैतिकता, विश्वसनीयता और उत्तरदायित्व को नए सिरे से परिभाषित किया है। ऐसे संक्रमणकाल में हिंदी पत्रकारिता की परंपरा, वर्तमान चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर गंभीर विमर्श आवश्यक हो जाता है।

हिंदी पत्रकारिता ने हस्तचालित छापाखानों से लेकर ऑफसेट प्रिंटिंग, रेडियो, टेलीविजन, डिजिटल मीडिया और अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित मीडिया परिवेश तक का लंबा और गतिशील सफर तय किया है। आज जब मीडिया कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा पत्रकारिता, एल्गोरिदमिक संपादन और डिजिटल नैतिकता जैसे नए प्रश्नों से जूझ रहा है, तब हिंदी पत्रकारिता के दो सौ वर्षों का पुनरावलोकन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। इन्हीं संदर्भों को केंद्र में रखते हुए छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर का पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है, ताकि अतीत, वर्तमान और भविष्य के मध्य सार्थक संवाद स्थापित किया जा सके।

इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का प्रमुख उद्देश्य हिंदी पत्रकारिता की द्विशताब्दी यात्रा का समग्र मूल्यांकन करते हुए उसके ऐतिहासिक योगदान, वैचारिक विकास, सामाजिक प्रभाव तथा तकनीकी रूपांतरण का गंभीर विश्लेषण करना है। 'उदंत मार्तंड' से प्रारंभ हुई हिंदी पत्रकारिता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और विकास-क्रम का पुनरावलोकन करते हुए स्वतंत्रता आंदोलन, राष्ट्रनिर्माण और लोकतांत्रिक मूल्यों के सुदृढ़ीकरण में उसकी भूमिका का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण और सोशल मीडिया के युग में उसके स्वरूप में आए परिवर्तनों का परीक्षण किया जाएगा तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डाटा पत्रकारिता और स्वचालित समाचार लेखन जैसी उभरती प्रवृत्तियों के प्रभाव का मूल्यांकन किया जाएगा।

पत्रकारिता की नैतिकता, विश्वसनीयता और जनउत्तरदायित्व से जुड़ी समकालीन चुनौतियों पर विमर्श करते हुए यह संगोष्ठी अकादमिक जगत, मीडिया उद्योग और शोधार्थियों के मध्य सार्थक संवाद स्थापित कर भविष्य की दिशा निर्धारित करने का प्रयास करेगी। यह आयोजन हिंदी पत्रकारिता के गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण करते हुए ए.आई. युग में उसकी संभावनाओं और उत्तरदायित्वों पर गंभीर मंथन का मंच प्रदान करेगा।

अपेक्षित परिणाम

इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से हिंदी पत्रकारिता की द्विशताब्दी यात्रा का एक समग्र अकादमिक दस्तावेज तैयार होगा, जिसमें उसके ऐतिहासिक विकास, वैचारिक योगदान, सामाजिक प्रभाव और तकनीकी रूपांतरण का सुविचारित विश्लेषण संकलित किया जाएगा। संगोष्ठी के विमर्श से हिंदी पत्रकारिता के अतीत और वर्तमान के बीच सेतु स्थापित होगा तथा ए.आई. युग में उसके दायित्वों, संभावनाओं और चुनौतियों को स्पष्ट दिशा मिलेगी। इस आयोजन से शिक्षाविदों, शोधार्थियों और मीडिया पेशेवरों के मध्य सार्थक संवाद सुदृढ़ होगा, जिससे पत्रकारिता शिक्षा, अनुसंधान और व्यावहारिक क्षेत्र में नवाचार को प्रोत्साहन मिलेगा। चयनित शोध-पत्रों का प्रकाशन हिंदी पत्रकारिता के अध्ययन हेतु एक संदर्भ-सामग्री के रूप में उपलब्ध होगा। साथ ही, पत्रकारिता की नैतिकता, विश्वसनीयता और जनउत्तरदायित्व को सुदृढ़ करने के लिए ठोस सुझाव और नीतिगत अनुशंसाएँ सामने आएंगी।

अंततः यह संगोष्ठी हिंदी पत्रकारिता के भविष्य की रूपरेखा को स्पष्ट करने, नई पीढ़ी के पत्रकारों और शोधार्थियों को प्रेरित करने तथा तकनीकी परिवर्तनों के अनुरूप उत्तरदायी और मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता की दिशा निर्धारित करने में सहायक सिद्ध होगी।

मार्गदर्शक मंडल

प्रेरणास्रोत
श्रीमती आनंदीबेन पटेल
माननीय कुलाधिपति एवं राज्यपाल,
उत्तर प्रदेश

संरक्षक
प्रो. विनय कुमार पाठक
माननीय कुलपति,
सी.एस.जे.एम. विश्वविद्यालय कानपुर

सह संरक्षक
प्रो सुधीर कुमार अवस्थी
माननीय प्रति कुलपति,
सी.एस.जे.एम. विश्वविद्यालय, कानपुर

सह संरक्षक
डॉ ओम जी उपाध्याय
सदस्य सचिव
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

सह संरक्षक
श्री राकेश कुमार मिश्रा
कुलसचिव
सी.एस.जे.एम. विश्वविद्यालय, कानपुर

आयोजन मंडल

संयोजक
डॉ दिवाकर अवस्थी
अध्यक्ष
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

सह संयोजक
डॉ ओमशंकर गुप्ता
सहायक आचार्य
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

आयोजन सचिव
डॉ योगेंद्र कुमार पांडेय
सह आचार्य
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

सह संयोजक
डॉ हरिओम कुमार
सहायक आचार्य
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

आयोजन सह सचिव
डॉ श्रीप्रकाश मिश्रा
एवं
डॉ. अंजनी कुमार उपाध्याय
सहायक आचार्य
हिंदी विभाग

आयोजन सह सचिव
डॉ. जितेन्द्र डबराल
सहायक आचार्य
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

आयोजन सह सचिव
डॉ रश्मि गौतम
सहायक आचार्य
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

सलाहकार समिति

प्रो. राजेश कुमार द्विवेदी, सीएसजेएम यूनिवर्सिटी, कानपुर
प्रो. बृष्टि मित्रा, सीएसजेएम यूनिवर्सिटी, कानपुर
प्रो. संदीप सिंह, सीएसजेएम यूनिवर्सिटी, कानपुर
प्रो. सुधांशु पाण्डिया, सीएसजेएम यूनिवर्सिटी, कानपुर
डॉ. किरण झा, सीएसजेएम यूनिवर्सिटी, कानपुर
डॉ. नमिता तिवारी, सीएसजेएम यूनिवर्सिटी, कानपुर
श्री जितेन्द्र कुमार शुक्ला, संपादक, दैनिक जागरण
श्री आशीष त्रिपाठी, संपादक, हिंदुस्तान

प्रो. गोविंद जी पांडेय, बीबीए यूनिवर्सिटी, लखनऊ
प्रो. वीरेन्द्र कुमार व्यास, म.गा.चि.ग्रा.वि.वि, सतना
प्रो. प्रशांत कुमार, हरियाणा सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी
प्रो. तनु डंग, जीजीएस इन्द्रप्रस्थ यूनिवर्सिटी, दिल्ली
डॉ. अरविन्द कुमार सिंह, बीबीए यूनिवर्सिटी, लखनऊ
डॉ. उपेन्द्र पांडेय, जागरण इंस्टीट्यूट, कानपुर
श्री नीरज कुमार तिवारी, संपादक, अमर उजाला
श्री अमिताभ अग्निहोत्री, राष्ट्रवाणी

आयोजन समिति

स्वागत समिति	डॉ जितेन्द्र डबराल (संयोजक)
	डॉ इन्द्रेश शुक्ला (सह संयोजक)
	श्री संगम बाजपेयी (सह संयोजक)
पंजीकरण एवं वित्त समिति	श्री प्रेम किशोर शुक्ला (संयोजक)
	डॉ सुरेश शर्मा (सह संयोजक)
तकनीकी एवं ICT समिति	श्री सागर कनौजिया (संयोजक)
	रोहित कुशवाहा, अजीत सिंह, रतन कुशवाहा, प्रांजल सचान, ऋषभ गौड़, हिमांशु मौर्या
मंच सज्जा व संचालन व्यवस्था	डॉ हरिओम कुमार (संयोजक),
	मिताली सिंह, सौम्या मिश्रा, प्रांजल कुमार, यज्ञेश पाल, जाह्नवी सिंह
अनुशासन समिति	डॉ रश्मि गौतम (संयोजक)
	प्रवल प्रताप सिंह, कौशल किशोर त्रिपाठी
मीडिया समन्वय समिति	डॉ हरिओम कुमार (संयोजक)
	सक्षम त्रिवेदी, इंद्रेश तिवारी, हरि ओम तिवारी, जय सिंह यादव
सांस्कृतिक समिति	डॉ हरिओम कुमार (संयोजक), श्रेयांश कुमार
भोजन व्यवस्था	डॉ ओमशंकर गुप्ता (संयोजक), डॉ राघवेन्द्र सिंह, देवेन्द्र प्रताप सिंह
यातायात व्यवस्था	डॉ योगेन्द्र पांडेय (संयोजक), नितिन यादव, प्रवीण कुमार
आवास व्यवस्था	अरविंद कुमार सिंह (संयोजक), डॉ इन्द्रेश शुक्ला, विक्रम सिंह

संपर्क हेतु

डॉ. योगेंद्र कुमार पांडेय-9026760033

श्री प्रेम किशोर शुक्ला-8318614472

प्रस्तावना

उपविषय

1.हिंदी पत्रकारिता का स्वर्णिम इतिहास
2.स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी पत्रकारिता का योगदान
3.आपातकाल की हिंदी पत्रकारिता
4.हिंदी पत्रकारिता और प्रेस की आजादी
5.हिंदी पत्रकारिता के ख्यातलब्ध पत्रकार
6.हिंदी पत्रकारिता की वर्तमान दशा एवं दिशा
7.हिंदी पत्रकारिता और लोकतंत्र
8.हिंदी पत्रकारिता में महिला विमर्श
9.हिंदी पत्रकारिता और हाशिए के समुदाय
10.हिंदी पत्रकारिता और मीडिया संस्थाओं / संगठनों की भूमिका
11.हिंदी पत्रकारिता में पत्र पत्रिकाओं की भूमिका
12.हिंदी पत्रकारिता: प्रिंट मीडिया से डिजिटल मीडिया तक
13.हिंदी पत्रकारिता और विज्ञापन
14.हिंदी पत्रकारिता और भारतीय सिनेमा
15.हिंदी पत्रकारिता में साहित्य और आध्यात्म
16.हिंदी पत्रकारिता और आत्मनिर्भर भारत
17.हिंदी पत्रकारिता और विज्ञान संचार
18.दीन दयाल उपाध्याय की हिंदी पत्रकारिता
19.हिंदी पत्रकारिता में एआई: सहायक या चुनौती?
20.हिंदी पत्रकारिता और कृत्रिम बुद्धिमत्ता
21.हिंदी पत्रकारिता और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म
22.हिंदी पत्रकारिता और जनसरोकार
23.हिंदी पत्रकारिता में क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों की भूमिका
24.हिंदी पत्रकारिता में प्रशिक्षण, शिक्षा और पाठ्यक्रम
25.हिंदी पत्रकारिता और राष्ट्रीय एकता
26.हिंदी पत्रकारिता और भाषा का संकट
27.हिंदी पत्रकारिता और जनमत निर्माण
28.भारतेंदु युगीन पत्रकारिता का अनुशीलन
29.कानपुर की हिंदी पत्रकारिता
30.एनईपी के प्रसार में हिंदी पत्रकारिता का योगदान
31.हिंदी पत्रकारिता में महिला पत्रकारों का योगदान
32.हिंदी मीडिया और बाजारवाद
33.हिंदी पत्रकारिता : कला एवं संस्कृति
34.खेल पत्रकारिता
35.मोबाइल पत्रकारिता (MoJo)
36.ग्रामीण पत्रकारिता : दशा एवं दिशा
37.आर्थिक पत्रकारिता
38.नागरिक पत्रकारिता
39.हिंदी पत्रकारिता और भारतीय ज्ञान परंपरा
40.हिंदी पत्रकारिता : अंतर अनुशासनिक विषय

उपरोक्त विषय अथवा उपविषय से संबंधित अन्य विषयों पर भी शोध आलेख आमंत्रित है।

शोध सारांश व शोध पत्र हेतु निर्देश

कृपया शोध-सारांश लगभग 300 शब्दों में 'यूनिकोड मंगल फॉन्ट 11' में 25 मार्च, 2026 तक एवं पूर्ण शोध-पत्र / शोध आलेख लगभग 3000 शब्दों में 'यूनिकोड मंगल फॉन्ट 11' में अधोलिखित ई-मेल पर 30 मार्च, 2026 तक भेजें।

E mail: conference.djmc@csmu.ac.in

शोध पत्र/ आलेख हिन्दी या अंग्रेजी भाषा में आमंत्रित हैं।

नोट- चयनित शोधपत्रों को ISBN संपादित पुस्तक में प्रकाशित किया जाएगा। (प्रकाशन शुल्क अलग से देय होगा)

पंजीकरण की अंतिम तिथि
25 मार्च, 2026

पंजीकरण हेतु निर्देश

पंजीकरण हेतु नीचे दिए गए QR को स्कैन करें या लिंक पर क्लिक कर अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें।

पंजीकरण लिंक: https://tinyurl.com/24merfaf

पंजीकरण शुल्क (आवास के बिना)

संकाय सदस्य / शिक्षाविद :- ₹ 1200
शोधार्थी:- ₹ 800
स्नातकोत्तर विद्यार्थी:- ₹ 500
अन्य : - ₹ 1500

(पंजीकरण शुल्क में कांफ्रेंस किट एवं भोजन शामिल है)

आवास शुल्क

₹ 4500 (Single Room), ₹ 2500 (Sharing Room)
यह शुल्क 2 दिन के प्रवास का है।

आवास शुल्क पंजीकरण शुल्क के अतरिक्त देय है।